विमला बहुगुणा : एक सच्ची कर्मयोगी

वीणा शिवपुरी

संवेदनशील लड़की

गांव में एक लड़की को रुपयों के बदले बुड्ढे के साथ ब्याह दिया गया। यह सुनकर विमला फूट-फूटकर रोने लगी। वह बार-बार मां से पूछती थी—"मां औरतों को इतने दुख क्यों सहने पड़ते हैं?" वह अपने चारों ओर पहाड़ी औरतों का दुख देखती थी। मीलों चलकर वे चारा, लकड़ी और पानी लाती हैं। खेतों में काम करती हैं। सास ससुर और पति के अत्याचार सहती हैं। कई तंग आकर आत्महत्या कर लेती हैं। विमला के संवेदनशील मन पर इन सबकी गहरी छाप पड़ी।

सन् 1931 में टेहरी गढ़वाल में विमला का जन्म हुआ था। पिता जंगलात के अफ़सर थे। घर में पांच बहनें थीं, पर कभी उन्हें बोझ नहीं समझा गया। विमला पर अपनी मां का गहरा असर पड़ा। पुराने समय की होते हुए वे बड़े खुले विचारों की औरत थीं। वे ऊंचनीच, जाति-पांति को नहीं मानती थीं। उन्होंने बच्चों को सादा जीवन उच्च विचार का आदर्श सिखाया। विमला के दो भाई स्वतन्त्रता की लड़ाई में शामिल थे। विमला भी घर-घर से सामान इकट्ठा करती तथा अन्य प्रकार की मदद करती थी। वह और ज़्यादा सक्रिय होना चाहती थी।

समाज सेवा का रास्ता

सन् 1950 के आस-पास अनेक लोग समाज निर्माण के काम से जुड़ने लगे। पहाड़ी औरतों के

पढ़ना बहना लिखना बहना
खूब समझकर कहना सुनना
दूजे की बातों में न आना
अपने मन की कलम पकड़ना

साभार—अंकुर

कठिन जीवन की तरफ़ भी ध्यान गया। महात्मा गांधी ने कौसानी में लक्ष्मी आश्रम खोलकर काम की शुरूआत तो कर दी थी। यह आश्रम सरला बहन की देखरेख में चलता था। भाई के कहने पर विमला को आश्रम में काम करने का मौका मिला।

आश्रम में कार्यकर्ताओं का जीवन बहुत कठिन था। मुंह अंधेरे से रात गए तक, कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। भोजन बहुत सादा, बिना मिर्च मसाले का होता था। चाय की मनाही थी। घर से पहली बार बाहर निकली लड़कियों को यह सब बहुत मुश्किल लगा, परन्तु विमला डटी रही। धीरे-धीरे उसे समाज सेवा के काम में आनन्द आने लगा।

कुछ समय बाद विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन शुरू किया। उन्होंने गांधीवादी कार्यकर्ताओं को मदद के लिए बुलाया। विमला यहां भी आगे

रही। बीस साल की विमला अब भूदान आंदोलन से जुड़ गई। गांव गांव जाकर ज़मींदारों से, धनियों से दान में जमीन मांगती। वह अपने दल में खूब सक्रिय हुई। इस दुबली पतली छोटी सी लड़की की मजबूत इच्छा शक्ति देख, सभी दंग थे।

जीवन में एक और मोड़

अब तक विमला ने अपने जीवन की दिशा तय कर ली थी। उसने अपना जीवन गांवों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था। सौभाग्य से उसके पिता ने इस बात का ध्यान रखते हुए विमला के लिए एक लड़का चुना।

विमला एक सच्ची कर्मयोगी है। उन्होंने अपने लिए एक रास्ता चुना और जीवन भर उस पर चलती आई। पत्नी और मां के रूप में हर कर्त्तव्य को पूरा किया। साथ ही अपनी स्वतंत्र पहचान भी बनाई। विमला वास्तव में सशक्त औरत की मिसाल है।

सुंदरलाल बहुगुणा ने सिर्फ़ आज़ादी की लड़ाई मे ही हिस्सा नहीं लिया था, वह स्थानीय कांग्रेस पार्टी का सचिव भी था। उसके सामने बढ़िया राजनीतिक भविष्य था। विमला का मन तो राजनीति में नहीं, समाज सेवा में रमा था। सुंदरलाल से मिलकर विमला ने अपने मन की बात कही और दोनों ने एक फैसला किया। सुंदरलाल और विमला किसी पिछड़े गांव में रहकर वहां के लोगों की सेवा करेंगे। इसके लिए उन्होंने टेहरी से 31 कि.मी. दूर सिलयारा गांव चुना।

पर्वतीय नवजीवन आश्रम

इस प्रकार शुरू हुआ सुंदरलाल बहुगुणा और विमला का नया जीवन। विमला गांव के बच्चों को पढ़ाती। लड़कियों की देखभाल करती। साथ ही खेती में मदद भी करती। उन्होंने आश्रम की उजाड़ जमीन को खेती योग्य बनाया। पेड़ पौधे लगाए। हरियाली बढ़ाई।

बहुगुणा दम्पत्ति ने मिलकर वहां सामाजिक और पर्यावरणीय आंदोलन शुरू किया। समय के साथ सुंदरलाल बहुगुणा का कार्यक्षेत्र और फैला। वे काम के सिलसिले में दूर-दूर जाने लगे। घर परिवार और आश्रम की पूरी ज़िम्मेदारी विमला ने अपने कंधों पर उठा ली थी। अनेक बार मुश्किलें आईं जिन्हें विमला ने अकेले ही संभाला।

इस सबके साथ विमला व्यापक आंदोलनों का हिस्सा भी बनी। जैसे मन्दिरों में जनजातीय लोगों को प्रवेश के लिए आंदोलन। शराब विरोधी आंदोलन तथा चर्चित चिपको आंदोलन। विमला ने धरने दिए, पुलिस की लाठियां खाई और जेल भी गई। विमला ने जीवन का जो रास्ता चुना था उसमें कठिनाइयां ही कठिनाइयां थीं। यहां तक कि कुदरत ने भी उन पर कहर ढाया। सन् 91 के भूकम्प से सिलयारा का आश्रम करीब करीब नष्ट हो गया। चारों तरफ़ गांवों में तबाही आ गई।

सन् 92 में टेहरी बांध परियोजना आंदोलन के चलते विमला को अन्य कार्यकर्ताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। विमला ने ग्यारह दिन तक भूख हड़ताल की।

एक सशक्त औरत

आज चाहे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुंदरलाल बहुगुणा ज़्यादा जाने जाते हैं, परन्तु विमला ही वह मज़बूत चट्टान है जिसके सहारे वे

आगे बढ़ पाए। विमला एक सच्ची कर्मयोगी है। उन्होंने अपने लिए एक रास्ता चुना और जीवन भर उस पर चलती आई। पत्नी और मां के रूप में हर कर्त्तव्य को पूरा किया। साथ ही अपनी स्वतंत्र पहचान भी बनाई। विमला वास्तव में सशक्त औरत की मिसाल है। □

सारे जमाने की हम ही जड़ें हैं
हमारी बदौलत सब आगे बढ़े हैं
हम क्योंकर यूं नीचे पड़े हैं
हम भी आगे बढ़ जायें तो
बड़ा मजा आए।